NJESR/November-2025/Volume-7/Issue-11 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2025.7.11.5-7

प्रवासी साहित्यकार सुधा ओम ढींगरा के साहित्य में वैश्विक बोध

रेनू **डॉ सुमन**
शोधार्थी **सह प्रोफेसर हिंदी .विभाग**
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर रोहतक हरियाणा।

(Received-15October2025/Revised-25October2025/ Accepted-10November-2025/ Published-30November2025)

हिन्दी में अब प्रवासी साहित्य एक स्वीकृत तथा लोकप्रिय अवधारणा है। आज का साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रवासी एक मनोविज्ञान है, अंतर्दृष्टि है। विगत कुछ वर्षों से प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों को केन्द्र में रखकर विचार-विमर्श जारी है। इसमें नित नये-नये विचार-विमर्श, वाद-विवाद को पार करते हुए अस्तित्व को प्राप्त करते हैं। यह एक परिवर्तनशील गतिमान प्रक्रिया है जो नवीन विचारधाराओं एवं विमर्शों से आत्मसात करते हुए साहित्यिक सीमाओं का विस्तातार करती है। प्रवासी शब्द से तात्पर्य परदेश में रहने वाला है तथा उसके द्वारा लिखित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। उदाहरणार्थः - जब कोई भारतीय अमेरिका में रहकर भारतीय हृदय से उत्पन्न संवेदनाओं को शिल्प के ढांचे से आकृति प्रदान कर उसे लेखन द्वारा संप्रेषित करता है तो ऐसा साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।

''दरअसल सच यह है कि अपने देश से दूर परदेश में रहकर रचित साहित्य की अपनी कुछ नितान्त निजी विशेषताएं हैं - यह समूचा साहित्य हम भारत में रहने वालों को अपने देश के बारे में सोचने के कुछ एकदम नये वातायन भी खोलता है, यह साहित्य केवल अपनी मातृभूमि से दूर रहने की पीड़ा भर बयान नहीं करता है और न ही वहां की सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता को रेखांकित करता है, बल्कि अपपने पुरखों-पूर्वजों की संचित जातीय स्मृति को भी ताजा करता चलता है।[1]

हिंदी का प्रवासी साहित्य वास्तविक अर्थ में हिंदी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करता है। प्रवास शब्द 'वस' धातु से अस्तित्व में आया जिसका अर्थ है - बसना बस का प्रयोग रहने के संदर्भ में किया जाता है। इस प्रकार प्रवास का अर्थ अपनी मातृभूमि से अलग विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, परदेश निवास तथा प्रवासी का अर्थ है यात्री, परदेशी अर्थात् एक देश से दूसरे देश में बसना या रहने को ही प्रवासी कहते हैं। हिंदी में प्रवासी साहित्य की एक स्वतंत्र सत्ता है जैसे - छायावाद, प्रगतिवाद, अकविता, नई कहानी, दलित एवं स्त्री विमर्श आदि की स्वतंत्र सत्ता है। प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य की पहचान है।

प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने हिंदी में गद्य एवं पद्य साहित्य में रचनाएं लिखकर अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। इनमें प्रमुख - मारीशस के अभिमन्यु अनत बृजेन्द्र कुमार भगत, 'मधुकर' , रामदेव

धुरंधर, प्रहलाद रामशरण आदि सूरीनाम के मुंशी रहमान खान, जजीतन राइन, अमरसिंह रमन आदि फीजी के कमला प्रसाद मिश्र, रामनारायण, सुब्रमणी आदि त्रिनिडाड की ममता लक्ष्मना, गुमाना के रंडलबूती सिंह और दक्षिण अफ्रीका के पंडित तुलसीराम पांडेय आदि साहित्यकारों ने हिंदी को विश्व के ऊँचे शिखर पर प्रतिष्ठित किया। दूसरे विदेशों में रहकर रचना करने वाले साहित्यकारों में अमेरिका के के गुलाब खंडेलवाल, अप्पना सुधीर, विनोद तिवारी, सुषम बेदी, इंग्लैंड की अचल शर्मा, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, कनाडा के अश्विनी गोप, राजेन्द्र सिंह का हिंदी में महत्वपूर्ण योगदान है। मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, गुमाना, त्रिनिडाड आदि में प्रमुख देश लघु भारत के रूप में जाने जाते हैं। यहां प्रवासी भारतीयों की संख्या पर्याप्त होने के कारण देश के निर्माण में उनकी प्रमुख भूमिका है। मॉरीशस तो विश्व में रामायण का देश माना जाता है। जहां प्रतिदिन घरों, मंदिरों, सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के केंद्रों में रामायण का पाठ चलता रहता है। सभी गांवों/नगरों में रामायण मंडलियां बनी हुई हैं जो नियमित रूप से घर-घर रामायण का सत्संग करती हैं।[2]

हिंदी प्रेमियों एवं देशभक्तों ने हिंदी भाषा एवं प्रवासी साहित्य की धारा को आगे विकसित किया। हिंदी शिक्षण का विस्तार और हिंदी लेखकों की पीढियां तैयार की जो आज हिंदी को उच्च शिखर पर स्थापित करते हैं, विदेशों में भी कई स्कूलों में हिंदी भी पढ़ाई जाती है। मॉरीशस के महात्मा गांधी स्थान में हिंदी में शोध कार्य भी किए जा रहे हैं।[3]

प्रवासी साहित्य की रचना के कारण चाहे जो भी रहे हों, उनमें चित्रित परिस्थितियां चाहे जैसी भी रही हों, किंतु आज का सत्य यह है कि प्रवासी साहित्य, भारतीय हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग बन गया हहै। प्रवास की समस्याओं और संघर्षो की वास्तविकताओं से भरा यह साहित्य हमें मानव के जुझारू होने की सीख भी देता है। हिंदी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक संसार रचा, जो चाहे छोटा ही था परन्तु उसने एक अलग साहित्य संसार की रचना की, जो पूरे विश्व में निरंतर फैलता गया और हिंदी के प्रवासी साहित्य का एक बिंब निर्मित हुआ। अब यह मॉरीशस तक सीमित न था, उसका परिदृश्य, वैश्विक बन गया। उसकी संरचना में कई शक्तियां काम करती है। आज स्थिति यह है कि मॉरीशस, अमेरिका एवं इंग्लैंड तीन ऐसे प्रमुख देश हैं जहां प्रवासी भारतीयों की संख्या सर्वाधिक है और संभवतः इस कारण इन देशों में हिंदी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है। इन प्रवासी लेखकों में अनेक ऐसे लेखक हैं जिनकी भारत में ही नहीं वैश्विक हिंदी मंच पर प्रतिष्ठा है और ऐसे ही प्रवासी साहित्य में सामाजिक मूल्य संक्रमण के भाव भी दृष्टिगोचर होते हैं, उनके साहित्य में रंगभेद, व्यवसाय, नौकरी तथा तरह-तरह की विषमताओं के रूप में दिखाई देते हैं। सुषम बेदी के उपन्यास 'लौटना में इस प्रकार के संदर्भों का बखूबी चित्रण हुआ है। जब मीरा को अमरीका में नौकरी लगती है तो उसे एक गरीब देश की होने के साथ-साथ रंगभेद का सामना करना पड़ता है - ''एड के लिए मीरा मानो एक कॉल थी ... एक गरीब देश का नुमांइदा ... उसका पति चाहे

एड से ज्यादा कमा रहा हो फिर वह एड के लिए एक बेचारी, असहाय प्रवासिनी थी जिसके लिए कुछ करके उसे लगता कि वह एक गरीब मुल्क का ही उत्थान कर रहा है।' [4]

प्रायः प्रवासी साहित्यकार अपने को एक सीमा तक विदेशी साहित्यकार कहलाने में गौरवान्वित अनुभव करते हैं जबकि विदेशों में पीढियों से भारतवंशी साहित्यकार के साहित्य में भारतीय संस्कृति, दर्शन की लालसा दिखाई देती है, जबकि प्रवासी साहित्यकार के साहित्य में विदेशी जीवन संस्कृति के वर्चस्व की झलक मिलती है। इस तरह प्रवासी साहित्यकार अपनी रचनाओं में भारतीय होकर भी विदेशी दिखता है तो भारतवंशी साहित्यकार अपने साहित्य में पीढ़ियों में विदेशी होकर भी विदेशी दिखता है तो भारतवंशी साहित्यकार अपपने साहित्य में पीढ़ियों में विदेशी होकर भी स्वेदशी, भारतीय और हिंदुस्तानी लगता है और यहह वर्ग भेद एक चैंकाने और विस्मित तथा स्तब्ध कर देने वाला विसंगतिपूर्ण वर्ग भेद है। प्रवासी हिंदी साहित्य अत्यंत वृहद वृहद एवं निरंतर चलायमान है। इसमें आरंभ में इसे अलोचनाओं का सामना करना पड़ा क्योंकि साहित्यकारों का मानना था कि साहित्यकार अपरिपक्व व आधुनिक चेतना से परे है। इसीलिए प्रवासी साहित्य की सार्थकता पर संदेहात्मक दृष्टि से देखा जाता है। वहीं इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर लाकर खड़ा किया है। अतः हिंदी साहित्य की एक शाखा माना जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। भारतीय साहित्य की संवेदनाओं, संघर्ष, चिंताओं व समस्याओं से भिन्न प्रवासी साहित्य ने हिंदी साहित्य का परिमार्जन किया। इसका स्वयं का भिन्न दृष्टिकोण संवेदना परिस्थिति तथा सृजन प्रक्रिया प्रवासी साहित्य को विदिष्टता व मौलिकता प्रदान करती है। हिंदी प्रवासी साहित्य की दो प्रमुख दृष्टि हैं -

1. नवीन मौलिक एवं विशिष्टता
2. वैश्विक स्तर का साहित्य सृजन

नवीन मौलिकता एवं विशिष्टता से तात्पर्य प्रवासी साहित्यकार के परिवेश से है जो परदेश में रहकर अपने परिवेश से आत्मसात् कर आस-पास घटित हो रही घटनाओं, संघर्ष समस्याओं व चिंताओं का संवेदनात्मक अंकन साहित्य में करता है। उसका साहित्य भारतीय साहित्य से कोई सरोकार नहीं रखता। यह उस साहित्य को नवीनता प्रदान करता है। किसी भी प्रकार का प्रवासी साहित्य उस समाज के लोगाों की प्रवासीय परिस्थितिय तथा यायावरी वृति के स्वरूप पर आधारित होता है।

संदर्भ-सूची

1. अवनिजेश अवस्थी और सुधा ओम ढींगरा, गवेषणा अंक-103, जुलाई-दिसम्बर 2014, पृ. 8
2. प्रवासी साहित्य: एक सर्वेक्षण, जोहानवर्ग के आगे एक सर्वेक्षण, कमल किशोर गोयनका, पृ. 23
3. अनुसंधान विमर्श, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, वर्ष-1, अंक-1
4. लौटना, सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, दिल्ली।